8. वन

झारखण्ड शब्द से झाड़-जंगल से भरे क्षेत्र का बोध होता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही जंगलों से आच्छादित रहा है। लेकिन जंगलों की अंधाधुंध कटाई और चारागाह के रूप में निरंतर इस्तेमाल से इसमें कमी आई है। अभी झारखण्ड में राज्य के कुल क्षेत्रफल के लगभग 30% भाग में ही वन पाये जाते हैं। यह भारत के कुल वन-क्षेत्र का लगभग 3.4% है। भारत में देश के

कुल क्षेत्रफल के लगभग 21% भाग में वन पाये जाते हैं। झारखण्ड में वनों का औसत राष्ट्रीय औसत से अधिक है।

राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार, किसी प्रदेश के कुल क्षेत्रफल के कम-से-कम एक तिहाई अर्थात् 33.33% भाग पर वन का विस्तार होना चाहिए। इस दृष्टि से झारखण्ड में वन, जो कि कुल क्षेत्रफल के 30% भाग पर है, वनों की आदर्श स्थिति से कुछ कम है।

जिलावार वन-क्षेत्र

क्र०	जिला	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में) (1)	वन-क्षेत्र (वर्ग किमी. में) (2)	जिले के कुल क्षेत्रफल में वन-क्षेत्र का % $\left[\frac{(2)}{(1)} \times 100\right]$
1.	कोडरमा	1,494	926.88	**62.04**
2.	चतरा	3,706	1,945.65	52.50
3.	गढ़वा	4,044	2,001.78	49.50
4.	गिरिडीह	4,919	2,268.64	46.12
5.	पलामू	8,705	**3,550.76**	40.79
6.	हज़ारीबाग	5,965	2,415.22	40.49
7.	प० सिंहभूम	9,907	3,413.95	34.46
8.	पू० सिंहभूम	3,533	1,049.30	29.70
9.	दुमका	6,212	1,609.52	25.91
10.	राँची	7,698	1,799.02	23.37
11.	लोहरदगा	1,491	2,65.69	17.82
12.	गुमला	9,077	1,307.99	14.41
13.	देवघर	2,479	235.50	9.50
14.	धनबाद	2,089	183.83	8.80
15.	बोकारो	2,880	126.72	4.40
16.	साहेबगंज	1,599	68.43	4.28
17.	पाकुड़	1,806	NIL	—
18.	गोड्डा	2,110	NIL	—

स्रोतः वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, झारखण्ड (2001)

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि राज्य का सर्वाधिक वन भूमि वाला जिला पलामू है जहाँ 3,550.76 वर्ग किमी. में वन-क्षेत्र मिलता है तथा सर्वाधिक वन-क्षेत्र प्रतिशत वाला जिला कोडरमा है जहाँ जिले के कुल क्षेत्रफल के 62.04% भाग पर वन-क्षेत्र का प्रसार है। राज्य के सर्वाधिक वन भूमि वाले प्रथम चार जिले हैं— पलामू (3,550.76 वर्ग किमी. वन-क्षेत्र), प० सिंहभूम (3,413.95 वर्ग किमी. वन-क्षेत्र), हज़ारीबाग (2,415.22 वर्ग किमी. वन-क्षेत्र) एवं गिरिडीह (2,268.64 वर्ग किमी. वन-क्षेत्र)। राज्य के सर्वाधिक वन-क्षेत्र प्रतिशत वाले प्रथम चार जिले हैं— कोडरमा (62.04%), चतरा (52.50%), गढ़वा (49.50%) एवं गिरीडीह (46.12%)।

वनों की श्रेणियां

झारखण्ड में पाये जाने वाले वनों की 3 श्रेणियां हैं— रक्षित वन, संरक्षित वन एवं अवर्गीकृत वन।

1. रक्षित वन (Protected Forest) : वैसे वन जिसमें मनुष्यों को अपने पशुओं को चराने एवं लकड़ी काटने की इजाजत होती है लेकिन उन पर कड़ी निगरानी रखी जाती है ताकि वनों को हानि न पहुँचे। झारखण्ड में रक्षित वनों का क्षेत्रफल 19,18,478 हेक्टेयर है जो राज्य के कुल वन-क्षेत्र का 81.27% है। रक्षित वनों का सर्वाधिक विस्तार हज़ारीबाग में है। इसके बाद क्रमशः गढ़वा, पलामू, राँची, लातेहार का स्थान आता है।

2. संरक्षित वन (Reserved Forest) : वैसे वन जिसमें मनुष्यों को अपने पशुओं को चराने एवं लकड़ी काटने की इजाजत नहीं होती है क्योंकि इन वनों को पूर्णतः सरकारी संपत्ति माना जाता है। झारखण्ड में सुरक्षित वनों का क्षेत्रफल 4,38,720 हेक्टेयर है जो राज्य के कुल वन-क्षेत्र का 18.58% है। राज्य का सबसे बड़ा संरक्षित वन-क्षेत्र पोरहाट एवं कोल्हान संरक्षित वन-क्षेत्र है। राजमहल के वन-क्षेत्र एवं पलामू के वन-क्षेत्र भी संरक्षित वनों के अन्तर्गत आते हैं।

3. अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest) : वैसे वन जो वर्गीकृत न हों अर्थात् स्वतंत्र वन। दूसरे शब्दों में, ये वैसे वन हैं जो रक्षित एवं संरक्षित वर्ग के वनों की श्रेणी में नहीं आते हैं। इन वनों में पशुओं को चराने एवं लकड़ी काटने के लिए सरकार की ओर से कोई प्रतिबंध नहीं होता है लेकिन सरकार इसके लिए शुल्क वसूलती है। झारखण्ड में अवर्गीकृत वनों का क्षेत्रफल 3,349 हेक्टेयर है जो राज्य के कुल वन-क्षेत्र का 0.14% है। अवर्गीकृत वनों की दृष्टि से साहेबगंज का झारखण्ड में प्रथम स्थान है। इसके बाद क्रमशः प० सिंहभूम, दुमका, हज़ारीबाग, पलामू, गुमला का स्थान आता है।

वन प्रदेश

झारखण्ड में 2 प्रकार के वन / वनस्पति प्रदेश मिलते हैं— आर्द्र पतझड़ वन प्रदेश एवं शुष्क पतझड़ वन प्रदेश।

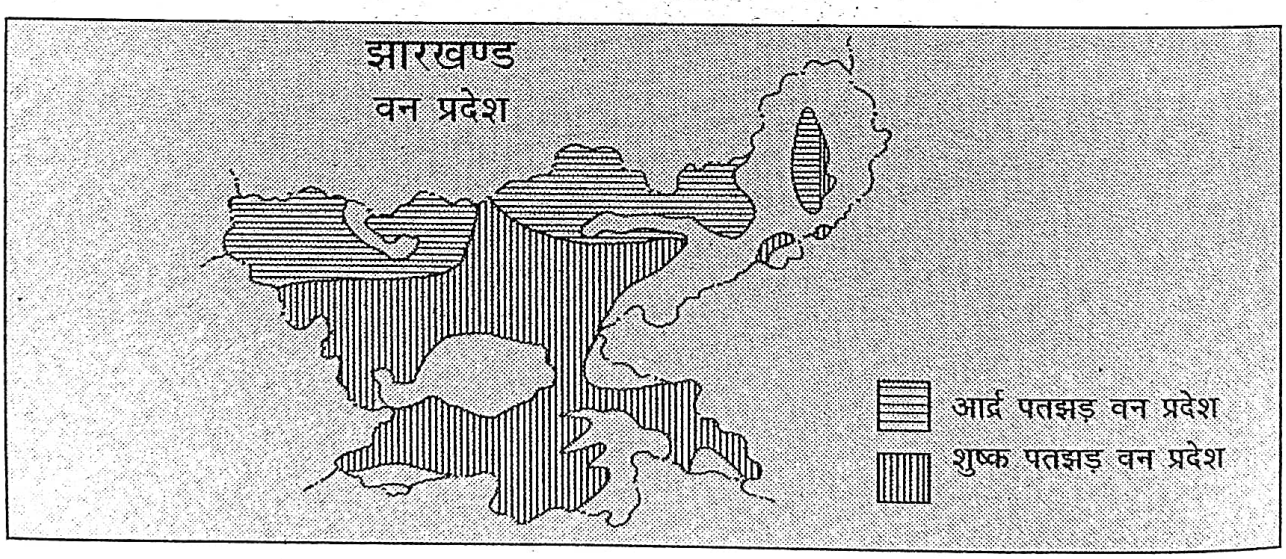

1. आर्द्र पतझड़ वन प्रदेश

जिन क्षेत्रों में 120 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा होती है वहाँ आर्द्र पतझड़ वन पाया जाता है। ऐसे क्षेत्र को *'आर्द्र पतझड़ वन प्रदेश (Moist decidous forest region)* कहा जाता है। झारखण्ड में आर्द्र पतझड़ वनों का विस्तार सिंहभूम, दक्षिणी राँची, दक्षिणी लातेहार एवं संथाल परगना में है। गौरतलब है कि ये वही क्षेत्र हैं जो जलवायु की दृष्टि से सागरीय मौसम से प्रभावित जलवायु क्षेत्र हैं और जहाँ अधिक वर्षा होती है। इन वनों में साल, शीशम, जामुन, पलाश, सेमल, करमा, महुआ एवं बांस मिलते हैं। साल के वृक्षों की प्रधानता है जिनके वन घने होते हैं और पेड़ों की ऊँचाई भी ज्यादा होती है। साल को *'पर्णपाती (पतझड़) वनों का राजा'* कहा जाता है।

2. शुष्क पतझड़ वन प्रदेश

जिन क्षेत्रों में 120 सेंटीमीटर से कम वर्षा होती है वहां शुष्क पतझड़ वन पाया जाता है। ऐसे क्षेत्र को *'शुष्क पतझड़ वन प्रदेश' (Dry decidous forest region)* कहा जाता है। झारखण्ड में शुष्क पतझड़ वनों का विस्तार पलामू, गिरिडीह, सिंहभूम, हज़ारीबाग, धनबाद एवं संथाल परगना में है। इन क्षेत्रों में कम वर्षा होती है। यहाँ प्रायः झाड़ियां एवं घास हैं। इस क्षेत्र में साल, अमलतास, सेमल, महुआ एवं शीशम के पेड़ मिलते हैं। इनकी गुणवत्ता अपेक्षाकृत निम्न होती है। बांस, नीम, पीपल, हर्रा, खैर, पलाश, कटहल एवं गूलर के वृक्षों की प्रधानता है।

वन उत्पाद

वनों से प्राप्त होने वाले उत्पादों को *'वन उत्पाद' / 'वनोत्पाद' (Forest Produce)* कहते हैं। वन उत्पाद दो तरह के होते हैं— मुख्य उत्पाद एवं गौण उत्पाद। *मुख्य उत्पाद (Major Produces)* के अंतर्गत लकड़ी संबंधी वन उत्पादों को शामिल किया जाता है जबकि *गौण उत्पाद (Minor Produces)* के अंतर्गत लकड़ी को छोड़ शेष वन उत्पादों को शामिल किया जाता है।

1. मुख्य उत्पाद

झारखण्ड में पाये जाने वाले मुख्य उत्पाद इस प्रकार हैं—

(i) साल (Sal) **:** इसकी कठोरता असाधारण होती है। इसलिए इसका उपयोग इमारतों की लकड़ियों के रूप में बहुतायत में होता है। साल वृक्ष की लकड़ी मकान, फर्नीचर, रेल के डिब्बे एवं पटरियों को रखने के स्लैब आदि बनाने में और अन्य आवश्यक वस्तुओं के निर्माण में काम आती है तथा बची हुई लकड़ी जलावन के काम आती है। साल को *'सखुआ'* भी कहते हैं। साल के पुष्पों को *'सरई फूल'* कहते हैं। साल के बीजों से तेल निकाला जाता है जिसे *'कुजरी तेल'* कहते हैं जो प्राकृतिक चिकित्सा के लिए बहुत उपयोगी है। साल को झारखण्ड में *'राजकीय वृक्ष'* का दर्जा प्राप्त है।

(ii) शीशम (Sisoo) **:** शीशम की लकड़ी काफी मजबूत होती है। उपयोग— फर्नीचर बनाने में।

(iii) महुआ (Mahua) **:** महुआ झारखण्ड का सर्वाधिक उपयोगी वृक्ष है क्योंकि इसकी लकड़ी, फूल, फल, बीज— सभी उपयोगी होते हैं। इसकी लकड़ी काफी मजबूत होती है और ये पानी पाकर भी जल्दी नहीं सड़ती इसलिए इसकी लकड़ी से दरवाजे एवं खम्भे बनाये जाते हैं। इसके फूल से देशी शराब बनायी जाती है। इसके फलों को बतौर सब्जी खाया जाता है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है।

(iv) सागौन (Teak) **:** इसकी लकड़ी बहुत ही मजबूत एवं सुन्दर होती है। उपयोग— फर्नीचर बनाने में, रेल के डिब्बे, हवाई जहाज आदि में।

(v) सेमल (Semal) **:** इसकी लकड़ी हल्की, मुलायम व सफेद होती है। उपयोग— पैकिंग के लिए बनाये जाने वाले पेटियों में, तख्तियां बनाने में, खिलौने बनाने में आदि। सेमल की रूई का व्यापक उपयोग है।

(vi) गम्हार (Gamhar) **:** इसकी लकड़ी हल्की, मुलायम व चिकनी होने के साथ-साथ काफी टिकाऊ होती है। लकड़ियों पर नक्काशी करने की दृष्टि से यह सबसे अधिक उपयोगी लकड़ी है। उपयोग— फर्नीचर बनाने में आदि।

(vii) आम (Mango) : इसकी लकड़ी सस्ती व सुलभ होती है। उपयोग— दरवाजे, खम्भे, खिड़की एवं अन्य फर्नीचर बनाने में। इसके फल बहुत स्वादिष्ट होते हैं जिस कारण इसे *'फलों का राजा'* कहा जाता है। इसके फल को *'अमृतफल'* भी कहा जाता है।

(viii) जामुन (Jambo) : इसकी लकड़ी पानी में हजारों वर्ष रहने के बावजूद नहीं सड़ती है। इसी कारण इसे कुएं के आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। अन्य उपयोग— फर्नीचर बनाने में। इसका फल खाया जाता है और इसके बीजों से दवा बनाया जाता है।

(ix) कटहल (Jackfruit) : इसकी लकड़ी महत्त्वपूर्ण इमारती लकड़ी मानी जाती है। इसका फल काफी चाव से खाया जाता है।

(x) केन्दु (Kendu) : केन्दु को मुख्य उत्पाद एवं गौण उत्पाद दोनों वर्गों में शामिल किया जाता है। जब केन्दु की लकड़ियों का उत्पाद बनाया जाता है तो वह मुख्य उत्पाद होता है किन्तु जब केन्दु की पत्तियों का उत्पाद बनाया जाता है तो वह गौण उत्पाद होता है। ध्यातव्य है कि केन्दु का उपयोग मुख्य उत्पाद की तुलना में गौण उत्पाद के रूप में ज्यादा होता है।

(xi) अन्य (Others) : अन्य इमारती लकड़ियों में पैसार, तुन, करमा, आसन, पांदन, सिद्धा, ढेला, नीम, धाउरा, पियार, अमलतास, इमली (तेतर), बेल, पीपल, आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

2. गौण उत्पाद

झारखण्ड में पाये जानेवाले गौण उत्पाद इस प्रकार हैं—

(i) लाह (Lac or Shellac) : लाह उत्पादन की दृष्टि से झारखण्ड का देश में प्रथम स्थान है। यहाँ देश के कुल लाह उत्पादन का 50% होता है। झारखण्ड में ऐसे क्षेत्र बहुतायत में मिलते हैं जो लाह उत्पादन की दृष्टि से सर्वथा अनुकूल हैं। इन क्षेत्रों में लौह उत्पादन के लिए उपयुक्त वातावरण (*उँचाई*–भू-भाग का समुद्र तल से 305 मीटर से अधिक ऊँचा होना, तापमान–12°C तक होना, वर्षा–150 cm से कम होना) मिलता है। लाह की 4 किस्में होती हैं— *वैशाखी लाह, जेठवी लाह, कतकी लाह* एवं *अगहनी लाह*। इनमें वैशाखी लाह सबसे महत्त्वपूर्ण है क्योंकि झारखण्ड के कुल लाह उत्पादन का 82% लाह इसी वैशाखी लाह से प्राप्त होता है।

(ii) केन्दु पत्ता (Kendu Leaves) : केन्दु पत्ता को गौण उत्पाद में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है क्योंकि यह झारखण्ड राज्य के राजस्व का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। केन्दु पत्ता से बीड़ी एवं तम्बाकू के मिश्रण बनाये जाते हैं।

(iii) तसर / मलबरी / रेशम (Tasar / Malberry / Silk) : तसर उत्पादन की दृष्टि से झारखण्ड का देश में प्रथम स्थान है। यहाँ देश के कुल तसर उत्पादन का 60% होता है। रेशम के उत्पादन में साल, अर्जुन, आसन, शहतूत आदि वृक्षों की आवश्यकता होती है जो झारखण्ड के वनों में बहुतायत में मिलते हैं।

(iv) बांस (Bamboo) : गौण उत्पाद में बांस का अपना अलग महत्त्व है क्योंकि कई आदिवासी एवं अनुसूचित जातियां बांस द्वारा खेती-गृहस्थी एवं घरेलू उपयोग के सामान तैयार कर सीधे बाजार में बेच कर जीविकोपार्जन करते हैं। व्यापारिक स्तर पर इसका उपयोग घर बनाने, कागज उद्योग एवं टेन्ट हाउस चलाने आदि में होता है।

(v) अन्य (Others) : अन्य गौण उत्पादों में साल बीज, महुआ बीज, महुआ पत्ता, चिरौंजी (पियार वृक्ष का बीज), इमली, आंवला, कत्था (खैर की लकड़ियों को खौलाकर उसके रस से बनाया जाने वाला), मधु, गोंद, घास, पत्तियां, छाल, बीज, फूल-फल, कंद-मूल, जड़ी-बूटियाँ आदि उल्लेखनीय हैं।

वन्य प्राणी क्षेत्र

झारखण्ड में अनेक वन्य प्राणी क्षेत्र स्थापित किये गए हैं जिसका उद्देश्य वन्य प्राणियों को संरक्षण देना एवं प्रकृति के साथ उनके संतुलन को बनाये रखना है। इस समय झारखण्ड में 1 राष्ट्रीय उद्यान (National Park), 11 वन्य जीव अभयारण्य / आश्रयणी / शरण-स्थली (wild life Sanctuaries), एवं कई जैविक उद्यान हैं।

1. राष्ट्रीय उद्यान

झारखण्ड का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान *बेतला राष्ट्रय उद्यान (Betla National Park)* है। इसकी स्थापना सितम्बर, 1986 ई. में की गई। लातेहार जिला में स्थित यह उद्यान 231.67 वर्ग किमी. में फैला हुआ है। यहाँ विश्व में पहली शेर गणना 1932 ई. में की गई थी। भारत सरकार 1973 ई. से यहाँ बाघ परियोजना (Tiger Project) चला रही है। इस राष्ट्रीय उद्यान में हाथी, बाघ, शेर, तेंदुआ, जंगली सूअर, चीतल, सांभर, गौर, चिंकारा, नीलगाय, भालू, बंदर, मोर, धनेश, वनमुर्गी आदि अनेक वन्य प्राणी देखे जा सकते हैं।

2. वन्य जीव अभयारण्य / आश्रयणी / शरण-स्थली

झारखण्ड में अभी तक कुल 11 वन्य जीव अभयारण्य स्थापित किये गये हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है—

क्र०	अभयारण्य का नाम	स्थापना	क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	प्रमुख वन्य जीव
1.	पलामू अभयारण्य, पलामू	1976	794.33	हाथी, सांभर आदि
2.	हज़ारीबाग अभयारण्य, हज़ारीबाग	1976	186.25	तेंदुआ, हिरण, सांभर आदि
3.	महुआडांड़ भेड़िया अ०, लातेहार	1976	63.25	भेड़िया, हिरण आदि
4.	दालमा अभयारण्य, पू० सिंहभूम	1976	193.22	हाथी, तेंदुआ, हिरण आदि
5.	तोपचांची अभयारण्य, धनबाद	1978	8.75	तेंदुआ, हिरण, जंगली भालू आदि
6.	लावालौंग अभयारण्य, चतरा	1978	207.00	बाघ, तेंदुआ, नीलगाय, हिरण सांभर आदि
7.	पारसनाथ अभयारण्य, गिरिडीह	1981	49.33	तेंदुआ, सांभर, हिरण, नीलगाय आदि
8.	कोडरमा अभयारण्य, कोडरमा	1985	177.95	तेंदुआ, सांभर, हिरण आदि
9.	पालकोट अभयारण्य, गुमला	1990	183.18	तेंदुआ, जंगली भालू आदि
10.	उधवा झील पक्षी बिहार, साहेबगंज	1991	5.65	बनकर, जलकौवा, बटान, खंजन, किंगफिशर आदि
11.	राजमहल पक्षी विहार, साहेबगंज	—	6.65	कबूतर, चूंडूल, मधुमक्खी, बुलबुल, खंजन आदि

3. जैविक उद्यान

झारखण्ड क्षेत्र में स्थापित जैविक उद्यान इस प्रकार हैं—

1. बिरसा भगवान जैविक उद्यान, ओरमांझी (राँची) : 1954 में स्थापित, राष्ट्रीय राजमार्ग 33 पर सपही नदी के तट पर स्थित
2. जवाहर लाल नेहरू जैविक उद्यान, सिटी पार्क (बोकारो) : पर्यटकों के सैर के लिए टॉय ट्रेन (Toy Train) की व्यवस्था

3. मगर प्रजनन केन्द्र, रूक्का (राँची) : IUCN प्रोग्राम के तहत 1987 में स्थापित
4. बिरसा मृग विहार, कालामाटी (राँची) : सांभर व चीतल के संरक्षण हेतु स्थापित

वन्य प्राणी क्षेत्र संबंधी विविध तथ्य

(i) अभयारण्यों में केवल *पलामू अभयारण्य* राष्ट्रीय स्तर का है तथा शेष राज्य स्तरीय हैं।

(ii) *दालमा वन्य जीव अभयारण्य* में हाथी परियोजना (Project Elephant) की शुरुआत की गई है।

(iii) *तोपचांची अभयारण्य* के मध्य में स्थित झील का नाम 'हरी पहाड़ी' है।

(iv) *उधवा झील पक्षी विहार* में जाड़े में 'प्रवासी पक्षी शरण लेने आते हैं।

(v) 26 सितम्बर, 2001 ई० को भारत सरकार द्वारा सिंहभूम जिला को देश के प्रथम गज आरक्ष्य (Elephant Reserve) के रूप में अधिसूचित किया गया।

(vi) झारखण्ड राज्य बनने के बाद साहेबगंज क्षेत्र में राजमहल की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द नेचर क्लब द्वारा *राजमहल जीवाश्म उद्यान* (Rajmahal Fossils Park) विकसित किया गया है।

(vii) *टाटा स्टील जन्तु उद्यान* जमशेदपुर में स्थित है।

(viii) *नक्षत्र वन* तथा *सिद्ध-कान्हु पार्क* राँची में हैं।

(ix) *तिलैया पक्षी विहार* कोडरमा में, *तेनुघाट पक्षी विहार* व *चन्द्रपुरा पक्षी विहार* बोकारो में तथा *ईचागढ़ पक्षी विहार* सरायकेला-खरसावां जिला में स्थित है।